

० ॐ तत्सत् ०

॥ श्री अयोध्याध्याप्ये नमः ॥

जय साईं जय जय सीयाराम

वाणी गुरु गुरु है वाणी विचि वाणी अमृत सारे ।

( भाई गुरुदास )

श्री कृपा निधान साहिब मिठिड़नि जे श्री मुखचन्द्र जा--

० वचनामृत ०

परात्पर श्री सीयाराम

( श्री उमा शिव सम्वाद् )

श्री शंकरु, दुखहरु, जगत गुरु प्रभु चरण कमल  
में प्रणामु करे पश्चात् श्री नित्य धाम साकेत महामण्डल  
में सुभग सनेह दृष्टि देई चवण लगो--

इन्हीं प्रेम निलय आनन्द भुवन खे नमस्कारु आहे ।  
जहिंजी अनन्त क्रोड़ अवितार, अनन्त क्रोड़ ब्रह्मा, विष्णु मां  
जहिड़ा शिव प्ररिक्रमा था कनि । उन महान धाम जे हिकिड़ी  
घड़ी में सौ क्रोड़ ब्रह्मण्डनि जा सूरज दीअनि वांग्यां  
विसामिनि बरनि था ।

प्रिय गिरीष नन्दिनी ! इन्हींअ माधुर्य लीला धाम  
में सकुशल दृष्टि देई, मुहिंजो मनु उन्मत्तु थियो हुयो मोर  
वांगियां नाचु थो करे ।

इन्हींअ मण्डल जो रहसु, सतीगुर ( श्री जनकनन्दिनी )  
ऐं जगती गुर ( प्रभू श्री रामचन्द्र ) जो दरसु । मां दिव्य सउ  
वर्ष श्री रामु नामु जपियो, ध्यानु कयुमि तदहिं गुरु रूपु  
राघव कृपा करे, क्रोड़ दामिनी वति नित्य निलय में  
शुभ नामिनी श्री सीय स्वामिनी जो परमाकान्ति मय दिव्य  
देशु देखारियो ।

तोखे भी परम प्रिया उत्कटु श्रद्धा भक्ति सां दिसी  
माधुर्य दृष्टि सां दर्शनु करायां थो ।

पंजनि जोजननि में ठण्डी सघन सुगन्धिति छाया वारे,  
महांनु दिव्य पारजात वृक्ष जे हेठां, सौ क्रोड़ सूरज वति  
मणिमय क्रोड़ चन्द्र वति ठण्डे महं मण्डप में, परम रमणीय  
पुष्पासन ते सनेह मई, माधुर्य मई, श्री सतीगुरु  
श्री मैथिलिचन्द्र जूं श्री राजवर्य द्वैभुज श्री रामचन्द्र जूं  
विराजित आहिनि । श्री जानकीचन्द्र जे सजे तरफि परादेवी,  
खबे दाहं प्रेमादेवी, श्री भू लीला सन्मुखु खड़ियूं आहिनि ।  
अहिलादिनी, महं अहिलादिनी मूल प्रकृति महं मँगल रासि  
थियूं देखारिनि ।

## श्रीमुख वचनौमृत

इहड़े परम पुरुष परम उदार अनंत क्रोड़ बलवण्डनि  
वति हृदय वारे, श्री जानकीचन्द्र जे पाद पद्म पराग खे, अनन्त  
ब्रह्मा, विष्णु, मां शंकरु वन्दनु करियूं था ।

जिनि जे नख मणि प्रकाश सां साकेत गौलोकु हैं  
अनन्त ब्रह्मण्ड भुवन प्रकाशित आहिनि । सागरी ( श्रीलक्ष्मी )  
ब्राह्मी ( सावित्री ) हैमीनि ( श्री पार्वती ) करे जिनि जो पद  
मंजीरु पदांगुलियुनि जो नीलमु पुखराजु वन्दित आहे । चौतरफु  
भ्रकुटी विलास खे दिसी सेवा करण वारियूं चन्द्र कला विमलादि  
पंज सहस्र सखियूं सेवा में सावधानु आहिनि । श्री जानकीचन्द्र  
जे कृपा कटाक्ष सां इहे सखियूं सन्सार जे भक्तनि जे पहिंजे  
स्वभाव अनुसार छांव थियूं करनि ।

अई प्रिय गौरी ! इन्हीअ भक्ति जे भतार खे नमस्कार  
करे श्री साकेत दूलह श्रीरामभद्र कुमार खे दिसु । सान्द्रघन  
वति सरूप वारो, निर्मलु लाल नवीन कमल वति विशान  
लोचन वारो, सत् चित् घनानन्द चरण कमल वारो, विद्युति  
वति दिव्य दुकूल वारो, वक्षस्थल विशाल ते दिव्य जयमाल  
वारो, कपोलनि जे रतन जटित कुण्डलनि जी झलक वारो,  
बैल वति कन्धनि ते घुँघुरारनि अलिकनि जे झलकार वारो,  
शरदचन्द्र वति मुखारिविन्द वारो, बिम्ब फल वति अधर,  
मुक्ता वति दन्दिङनि वारो, नूपरांडद रतन जड़ित कंकण  
मणि मेखला जे रुणत्कार सां सदन खे शोभित करण

वारो । क्रोड़ सूरज वति क्रीट सां चमत्कृति काश्मीरी औं  
मलय तिलक सां आमोदित, नासाग्र में विशाल मोतीअ वारो,  
मृदु स्वभावु, सदां कारुणिक, सौम्य दर्शन वारो, जलधर वति,  
ध्वनितिकारु करण सां मन्दिर जी प्रति ध्वनि भरण वारो ।  
भक्तनि जे पालण पोषण में निपुणु, अशर्णि शर्णि, प्रणति  
पाल प्रभूअ खे नमस्कारु करि । क्रोड़ कन्दर्प वति लावण्य धामु,  
निकुंज में नित्य स्थित, साकेत जे क्रोड़ चन्द्र वति रतन मणि  
जटित सुभग सिंहासन ते आसीनु श्रीमैथिलिचन्द्र जे भुजवल्लीअ  
सां अलंकृति, सखीगन सहित शोभिति । श्री भरतदेव, श्री  
लक्ष्मणदेव शत्रुसूदनदेव करे छत्र, चामर, व्यंजन सां आनन्दित  
देवाधि देव खे नमस्कारु करि ।

श्री गिरिजे ! प्रेम जो भण्डारु चउ, भक्ति जो भतारु  
चउ, बल जो दातारु चउ । प्रभू दीनानाथु चउ, बुदलनि जो  
हथु चउ, श्री सीय रघुनाथु चउ । गरीबि निवाज चउ, लाज  
जो जहाजु चउ, सूर सिरताजु चउ । सीयावरु रामु चउ,  
सदा पूर्ण काम चउ, रामु रामु रामु चउ । सीय रघुवीरु चउ,  
लक्ष्मणु वीरु चउ, भरतु शत्रुहनु धीरु चउ । दिव्य दशरथ जो  
कुमारु, दुष्टनि जो दलन हारु, माधुर्य जो प्रदातारु, मैगसि  
अभय करण हार खे नमस्कारु सहस्त्र वार नमस्कारु ।

कहिड़ो श्री सीयारामु आहे ? । काल रूपु भुवनेश्वरनि  
जो महा कालु आहे । सौं किरोड़ विष्णु वति भक्त

## श्रीमुख वचनौमृत

पालनु करे थो । सौ क्रोड़ ब्रहमा वति चतरु, सौ किरोड़ शंकर  
वति संघार करता । सौ किरोड़ दुर्गा महाकाली वति  
भयंकरु, सौ किरोड़ आकाश वति आश्रय दाता आहे । सौ  
किरोड़ सूरजि वति तीक्ष्ण तेजस्वी, सौ किरोड़ चन्द्र वति  
आनन्द दाता ! सौ किरोड़ वायू वति तकिड़ो पन्धु करे  
शरणागतनि जी रक्षा करे थो । किरोड़ कामदेव वति अति  
सुन्दरु भक्तनि जो मनोहरु आहे । किरोड़ हिमाचल वति श्री  
श्री रामचन्द्रु निष्कम्पु निर्भउ आहे । किरोड़ समुंद वति गम्भीरु  
आहे, किरोड़ तीर्थ वति पवित्रु आहे संभालण सां, कामना  
दाइकनि में सौ किरोड़ काम धेनु कल्प वृक्ष वति आहे । आरोग्य  
करण में सौ किरोड़ सुधा वति आहे ।

सो सीयारामु ! जो अघट घटना करण में समर्थु आहे ।  
सूर्यचन्द्र पवन अग्नि मृत्यू खे भी भव में हलाइण वारो । सर्व  
नियमनि जे शक्ति जो ऐश्वर्यु रखण वारो । सभिनी खां आदुर  
जी दृष्टि वठण वारो । भयंकर समय निर्भयता वारो । अमोघ  
बल वारो । पहिंजी महिमा खे छेद्रे नीच जातियुनि सां मिली  
रहण जी सुशीलता वारो । दास जा दोष न वीचारण वारी  
वात्सल्यता वारो । स्वजननि खे पाण खां वधीक मनण वारी  
सुहृदिता वारो । दान युधि प्रतिज्ञा पालण में अविचलु सो स्थिर  
धीरता वारो । बिये जो दुखु दिसी पहिंजे अखिड़ियुनि मंझां  
आंसू वहाइनि सो दया वारो । श्री सियारामु आहे ।

अम्बृत पान वांगियां दर्शन में स्वाद जी माधुर्यता वारो,  
पहिंजे शुभ लक्षण वारे रूप में वैरागियुनि जी चित रमाइण  
वारो, सो राम नाम वारो । अनन्त कोट ब्रह्मण्डधारी विराटु  
हृण्य गर्भ ईश्वरु जहिंजे पराक्रम में लीनु थियनि सो महा  
वीर्यवानु, सर्व काल एक रस, सुन्दरु सो परा सुखमा जी दुति  
वारो । सर्वज्ञता जो स्वामी । त्रिपाद विभूति विलास वारो,  
श्री सीयरामु आहे ।

प्रिय पार्वती ! इन्हीअ दिव्य लक्षणनि मंझां क्रोड़िवों  
अंशु सर्व ब्रह्मण्डनि में फैलिजी शोभमानु हैं श्रीमान् पदवी  
पाए थो । जियें चुम्बक पत्थर जी सता सां लोहु हले चले थो  
पाण भिन्न आहे चुम्बकु । तियें श्री सीयाराम जी सता सां जड़  
ब्रह्मण्ड चेतनु थियनि था, पाण सीयरामु भिन्न आहे ।